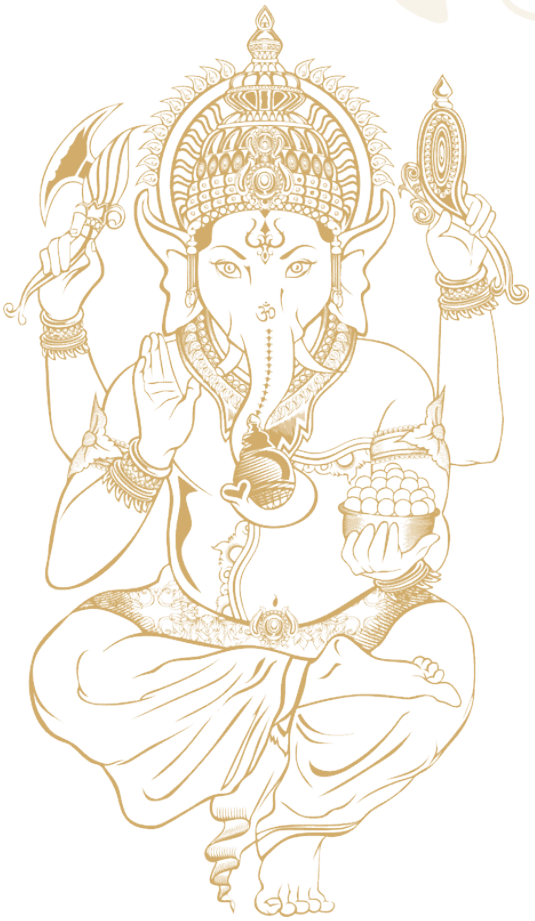

Jayesh

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120889302

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
26-27/09/2001	जन्म तिथि	17/06/2001
बुध-गुरुवार	दिन	रविवार
घंटे 01:08:00	जन्म समय	10:30:00 घंटे
घटी 47:35:14	जन्म समय(घटी)	11:59:00 घटी
India	देश	India
Hyderabad	स्थान	Hyderabad
17:22:00 उत्तर	अक्षांश	17:22:00 उत्तर
78:26:00 पूर्व	रेखांश	78:26:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:16:16	स्थानिक संस्कार	-00:16:16 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:05:54	सूर्योदय	05:42:23
18:08:15	सूर्यास्त	18:51:55
23:52:35	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:21

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 1वर्ष 4मा 23दि		29:52:38	मिथु	लग्न	सिंह	06:35:47	केतु 3वर्ष 1मा 13दि	
राहु		09:54:07	कन्या	सूर्य	मिथु	02:12:12	सूर्य	
19/02/2020		06:53:43	मक	चंद्र	मेष	07:23:30	30/07/2024	
19/02/2038		16:10:38	धनु	मंगल व	वृश्चि	27:45:44	31/07/2030	
राहु	01/11/2022	04:30:58	तुला	बुध व	मिथु	01:13:00	सूर्य	17/11/2024
गुरु	27/03/2025	19:40:56	मिथु	गुरु	मिथु	00:15:36	चन्द्र	19/05/2025
शनि	01/02/2028	13:07:10	सिंह	शुक्र	मेष	16:41:39	मंगल	23/09/2025
बुध	20/08/2030	21:05:34	वृष	शनि	वृष	13:23:34	राहु	18/08/2026
केतु	08/09/2031	07:58:53	मिथु व	राहु व	मिथु	12:31:42	गुरु	06/06/2027
शुक्र	07/09/2034	07:58:53	धनु व	केतु व	धनु	12:31:42	शनि	18/05/2028
सूर्य	02/08/2035	27:29:55	मक व	हर्ष व	कुंभ	00:49:41	बुध	25/03/2029
चन्द्र	31/01/2037	12:14:19	मक व	नेप व	मक	14:33:00	केतु	31/07/2029
मंगल	19/02/2038	18:58:52	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	19:42:35	शुक्र	31/07/2030

लग्न-चलित

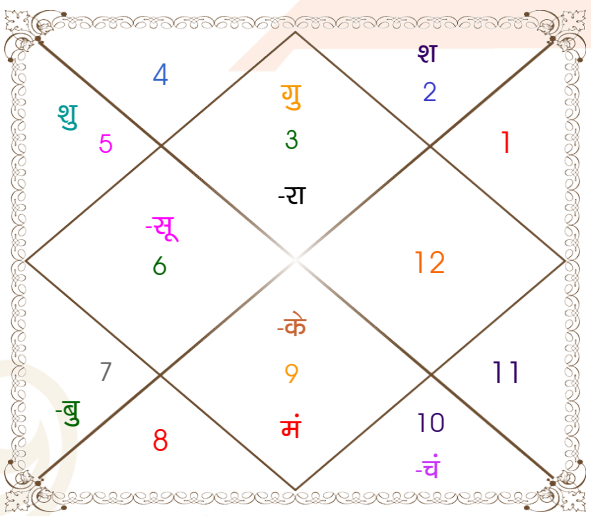

लग्न-चलित

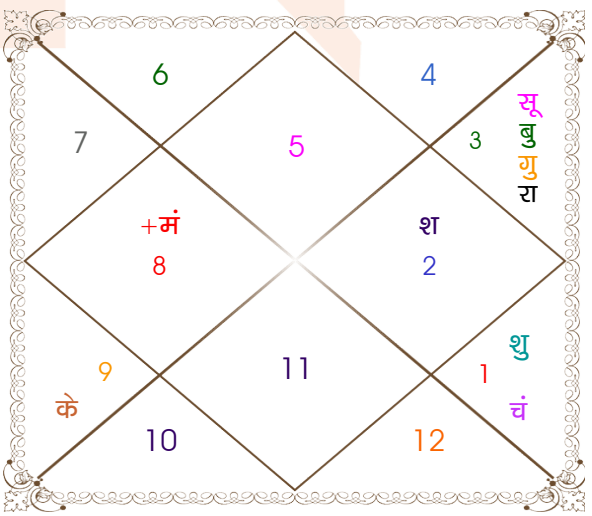

Pandit Chidamber Mishra

9246159232

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	नकुल	अश्व	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	मंगल	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	मेष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

श्रंलमेी का वर्ग सिंह है तथा Ms. का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार श्रंलमेी और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

श्रंलमेी मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि श्रंलमेी कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Ms. कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

श्रंलमेी तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।